

श्री जैन सत्य प्रकाश

(मासिक पत्र)

विषय-दर्शन

- १ श्रीयशोद्वारत्रिशिका : आचार्य महाराज श्रीमद् विजयपद्मसूरिजी : ४७१
 २ दिगंबराना उत्पत्ति : आचार्य महाराज श्रीमद् सागरानंदनारण्य : ४७४
 ३ प्रभुश्री महावीरनुं तरुज्ञान : आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलक्ष्मिसूरिजी : ४७६
 ४ समीक्षाभ्रमाविष्करण : आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलावण्यसूरिजी : ४८१
 ५ यंपापुरी नहिमा : आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलक्ष्मिसूरिजी : ४८५
 ६ हस्ताक्षरित प्रतिष्ठा अने सूचयत्रो :
 प्रो. लींगलाल रमिक्रम भापडिया एम. ए. : ४७
 ७ दिगंबरशास्त्र कसे बने : मुनिराज श्री दर्शनविजयजी : ४९१
 ८ आदर्शभेद : मुनिराज श्री दिमांशुविजयजी : ४९६
 ९ आनंद अक्षक वा अक्षिग्रह :
 आचार्य महाराज श्रीमद् जिनहरिसागरसूरिजी : ४९९
 १० पुरातन इतिहास अने स्थापत्य
 (१) प्रथीन क्षेत्र संग्रह : मुनिराज श्री जयंतविजयजी : ५०६
 (२) सरधनाना शिलाक्षेपे : श्रीयुत नगीनदास मनसुभराम (वीरेश) : ५०८
 सभाचार : पृष्ठ ४१० नी साभे.

<p>श्री जैन सत्य प्रकाश : विज्ञापित : जे पूज्य मुनिराजने "श्री जैन सत्य प्रकाश" भोक्कलत्रामां आवे छे, तेज्योये पोताना विहारादिकना कारणे अहलातुं सरनामुं हरेक महिना १ सुटी त्रीज पहिलां अमने लप्पी जल्पावमा कृपा करती, तथी मासिक गेरवहसे न जती. वषतसर मणी शके</p>	<p>वार्षिक लवाङ्गमः स्थानिक १-८-० अक्षरगामनुं २०-० छुटक अंक ०-३-०</p>	<p>जेष्ठे छे श्री 'जैन सत्य प्रकाश' ना प्रथम वर्षना २, ३, ७, ८, अंकानी जर्जर छे. जेज्यो त्रे भोक्कलशे तेनो सालाहस्वीकार कराने अहलातां तेटला अङ्के मजरे आपवामां आवशे.</p>
---	--	---

मुद्रक अने प्रकाशक : श्रीमनलाल गोडणदास शाह, मण्डि मुद्रणालय,

धाणपुर, अजुरीनी पोण, अमरावाट.

प्रकाशन स्थान : श्री जैनधर्म सत्यप्रकाशक समिति कार्यालय,

जेशिंगलार्धनी वारी, धीकांटा, अमरावाट.